

4.8 सारांश (Summing-up)

जनसंख्या सम्बन्धी माल्थस का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके जनसंख्या सम्बन्धी मौलिक विचारों ने न केवल समकालीन विद्वानों को अपितु आधुनिक विद्वानों को भी प्रभावित किया है। अनेक आर्थिक सिद्धांतों को प्रतिपादन में भी माल्थस के जनसंख्या-सम्बन्धी विचारों को मूलभूत मान्यता के रूप में अपनाया गया है माल्थस का विचार उस समय आया जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति का आभास मात्रा था तथा इंग्लैण्ड युद्ध में लगा था। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भोजन होती है अर्थात् खाद्यान्न की माँग पहले होती है। इसलिए माल्थस ने जनसंख्या वृद्धिदर तथा खाद्य पदार्थ की वृद्धि दूर को आधार मानकर अपना सिद्धांत दिया। उनके अनुसार जनसंख्या की वृद्धि ज्यामितीय गति से होती है। वस्तुतः उनका ऐसा कहना जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर को इंगित करना था। उस समय कृषि विज्ञान का विकास अधिक नहीं हुआ था तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि दर काफी कम थी। आज उनके सिद्धांत की आलोचन विकसित राष्ट्रों को आधार बनाकर की जाती है, परन्तु यह सत्य है कि आज जो विकसित राष्ट्रों में मंद जन्मदर है, वह माल्थस की चेतावनी का ही परिणाम है।

वर्तमान विश्व में जनसंख्या वृद्धि जिस तीव्र गति से हो रही है, उस अनुपात में पर्याप्त तकनीक विकास के बाद भी मानव उतने संसाधनों का विकास नहीं कर पा रहा है, जितने संसाधनों की उसे आवश्यकता है। आज विश्व के अनेक विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोटक हो गई है तथा खाद्यान्न की समस्या बनी हुई है एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों में विश्व की 76.5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है जबकि इन देशों के हिस्से में विश्व का 19 प्रतिशत सकल राष्ट्रीय उत्पाद (World GNP) ही आता है। सिर्फ भारत के हिस्से में विश्व 16.7 प्रतिशत आबादी आती है, जबकि विश्व के सकल राष्ट्रीय उत्पाद का हिस्सा एक प्रतिशत से कुछ ही अधिक है। जनसंख्या तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद का यह बड़ा अंतर तीव्र जनसंख्या वृद्धि का परिणाम है। फलतः इन देशों में बेरोजगारी, कृपोषण, निर्धनता आदि की समस्या बनी हुई है। वास्तव में माल्थस ने अपने सिद्धांत में जो निष्कर्ष लगभग दो सौ वर्ष पहले दिया था वह जनसंख्या और जीवन निर्वाह के साधन के क्षेत्र में आज भी लागू हो रहा है।

4.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

- माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत कब प्रतिपादित हुआ?

(क) 1976 (ख) 1805 (ग) 1803 (घ) 1809
- "An Essay on the Principles of Population" किसकी रचना है-

(क) मैथ्यू हेल (ख) विलियम गाडविन (ग) वाल्टर रैले (घ) माल्थस

3. माल्थस कहाँ के निवास थे?
 (क) इंगलैण्ड (ख) फ्रांस (ग) जर्मनी (घ) स्वीडन
4. किसने कहा कि जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय गति से होती है?
 (क) डाल्टन (ख) माल्थस (ग) मार्शल (घ) गाडविन
5. माल्थस के अनुसार किसी देश की जनसंख्या किसी अवरोधक के अभाव में कितने वर्षों में दो गुनी हो जाती है?
 (क) 40 वर्ष (ख) 30 वर्ष (ग) 25 वर्ष (घ) 35 वर्ष
6. माल्थस ने किसे कृत्रिम नियंत्रण के अंतर्गत नहीं रखा?
 (क) देरी से विवाह (ख) बहुचर्य जीवन (ग) संयम से रहना (घ) गर्भपात्र

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
 Critically examine the Malthusian theory of population
2. माल्थस का सिद्धांत विकासशील देशों में कहाँ तक लागू होता है?
 How far is the Malthusian theory applicable in developing countries ?
3. माल्थस का सिद्धांत कोई कागजी चीता नहीं है, अपितु एक वास्तविकता है। "विवेचन कीजिए।
 The Malthusian Theory of Population is not a paper tiger, it is a reality " Discuss.

4.6 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

- | | | |
|-------------------------|---|--------------------------------|
| 1. डॉ० एस० डी० मौर्य | - | जनसंख्या भूगोल |
| 2. प्रो० एल० सी० मित्तल | - | आधुनिक अर्थशास्त्र के सिद्धांत |
| 3. के०पी० जैन | - | अर्थशास्त्र के सिद्धांत |
| 4. Clarke, John I. | - | Population Geography |



इकाई-2 जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त तथा अनुकूलतम् पाठ - 5
जनसंख्या सिद्धान्त
(Theories of Demographic Transition and
Optimum Population)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

- 5.0 उद्देश्य (Objective)**
- 5.1 परिचय (Introduction)**
- 5.2 जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त (Demographic Transition Theory)**
- 5.3 अनुकूलत जनसंख्या सिद्धान्त (Theory of Optimum Population)**
- 5.4 माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त तथा अनुकूलम् जनसंख्या सिद्धान्त में तुलना
(Comparison Between Malthusian Theory of Population and
Optimum Population Theory)**
- 4.5 सारांश (Summing Up)**
- 4.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)**
- 4.7 संदर्भ पुस्तकों (Reference Books)**

5.0 उद्देश्य (Objective)

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन से अध्ययनकर्ता जान सकेंगे कि

- ◆ जनसंख्या-संसाधन में क्या सम्बन्ध है।
- ◆ जनसंख्या सम्बन्धी क्या सिद्धान्त है।
- ◆ जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त क्या है।
- ◆ जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न चरणों में जन्मदर और मृत्युदर में किस प्रकार परिवर्तन होता है।
- ◆ अनुकूलतम् जनसंख्या क्या है।
- ◆ आर्थिक उन्नति के लिए मानव-शक्ति उपयोगी कैसे है।

- ◆ माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत और अनुकूल जनसंख्या सिद्धांत में क्या अंतर है।
- ◆ कोई राष्ट्र जनसंख्या नीति बनाने में इन जनसंख्या सिद्धांतों का क्या लाभ उठा सकता है।

5.1 परिचय (Introduction)

जनसंख्या और संसाधन की अध्ययन भूगोल का महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। किसी भी देश का विकास उसके प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों पर निर्भर करता है। मनुष्य ही उत्पादनकर्ता, वितरक तथा उपभोक्ता है। वह स्वयं संसाधन भी है। वह प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए देश के आर्थिक विकास से सहयोग करता है। मानव शक्ति के अभाव में प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग संभव नहीं है। कोई देश संसाधन सम्पन्न होते हुए भी जनसंख्या की कमी के कारण पिछड़ा रह जाता है, क्योंकि वह देश संसाधन का समुचित दोहन नहीं कर पाता, जबकि कोई देश जनसंख्या की अधिकता तथा प्राकृतिक संसाधन के अभाव के कारण पिछड़ जाता है। जनसंख्या तथा संसाधन से संबंधित समस्याओं के बारे में विभिन्न विद्वानों ने कई जनसंख्या-सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं। माल्थस प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने जनसंख्या के सिद्धांत को निश्चित एवं ठोस आधार प्रदान किया तथा जनसंख्या समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। माल्थस के बाद इस सम्बन्ध में कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए जिनमें दो सिद्धांत प्रमुख हैं।

- (1) जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत
- (2) अनुकूलमतम् जनसंख्या सिद्धांत

5.2 जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त (Demographic Transition Theory)

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत जनसंख्या विकास का आधुनिकतम् सिद्धांत है। इस सिद्धांत का मूल प्रतिपादन नोटेस्टीन (E. W. Notestein) महोदय ने सन् 1945 में किया था। यह सिद्धांत विकसित यूरोपीय देशों में विगत 2000 वर्षों से जन्मदर और मृत्युदर में हो रहे परिवर्तन की प्रवृत्तियों पर आधारित अनुभव जनित (Empirical) सिद्धांत है। जन्मदर और मृत्युदर के बीच का सम्बन्ध जनांकिकीय संक्रमण कहलाता है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि दीर्घकाल में जनसंख्या का विकास किस प्रकार होता है। आर्थिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं में जन्मदर और मृत्युदर भिन्न-भिन्न होती है। फलतः जनसंख्या की विकास दर में भी भिन्नता रहती है।

नोटेस्टीन द्वारा प्रतिपादित मूल संकल्पना में महत्वपूर्ण संशोधन हुआ है। इस सिद्धांत के सम्बन्ध में थाम्पसन (W. S. Thompson), कार्ल साक्स (Karl Sax) जी० टी० ट्रिवार्था (G. T. Triwartha), ब्लैकर (C. P. Blaker) पीटर काक्स (P. r. Cox) इत्यादि विद्वानों ने अपना विचार देकर परिमार्जित किया है। नोटेस्टीन तथा थाम्पसन, जनांकिकीय संक्रमण की तीन अवस्थाओं को माना है, तो कार्ल साक्स और ट्रिवार्था ने चार अवस्थाओं को जबकि ब्लैकर और पीटर काक्स ने पाँच अवस्थाओं के अनुसार जनांकिकीय चक्र का वर्णन किया है।

नोटेस्टीन ने जनांकिकीय संक्रमण की तीन अवस्थाओं का प्रतिपादन किया है जो इस प्रकार है—

1. जनसंख्या में उच्च वृद्धि दर की अवस्था (State of high growth rate) जिसमें जन्मदर उच्च होती है।
2. जनसंख्या की वृद्धि दर में ह्रास की अवस्था (State of decreasing growth rate) जिसमें जन्मदर ने कमी के कारण वृद्धि दर में ह्रास होता है।
3. जनसंख्या ह्रास की अवस्था (Stage of population decrease) जिसमें जन्मदर पुनः स्थापना दर (Replacement rate) से नीचे होती है और मृत्यु दर निम्न स्तर पर स्थित हो जाती है।

जी० टी० ट्रिवार्था के विचार के अनुसार मनुष्य में प्रजनन क्रियाएँ सभी स्थानों पर समान होती हैं, परन्तु विभिन्न प्रदेशों के सांस्कृतिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक व राजनीतिक विकास में अंतर होने के कारण विभिन्न प्रदेशों में जन्मदर, तथा मृत्युदर में भिन्नता पायी जाती है। वैज्ञानिक विकास के साथ किसी प्रदेश की मृत्युदर में ह्रास होता है। जन्म दर तथा मृत्युदर में होनेवाले सामयिक परिवर्तन के कारण जनांकिकीय संक्रमण की विभिन्न अवस्थाएँ बनती हैं। जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक प्रदेश या देश में जनसंख्या के विकास की पाँच अवस्थाएँ होती हैं जो इस प्रकार हैं—

1. उच्च स्थायी अवस्था (High Stationary Phase)
2. प्रारंभिक वर्द्धमान अवस्था (Early Expanding Phase)
3. उत्तर वर्द्धमान अवस्था (Late Expanding Phase)
4. निम्न स्थायी अवस्था (Low Stationary Phase)
5. ह्रासमान अवस्था (Declining Phase)

(1) **उच्च स्थायी अवस्था (High Stationary Phase)** इस अवस्था में जन्मदर और मृत्युदर दोनों उच्च होती है जो 35 प्रतिहजार से अधिक होती है। जन्म तथा मृत्यु बराबर होने के कारण इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि बहुत मंद तथा जनसंख्या स्थिर होती है। जनांकिकीय संक्रमण की यह प्रथम अवस्था कृषि समाज में पायी जाती है। यहाँ निरक्षरता, परिवार नियोजन, तकनीक की अज्ञानता, बाल विवाह, परिवार के आकार तथा संतान की इच्छा से सम्बन्धित सामाजिक रीति रिवाज एवं अंध विश्वास के कारण उच्च जन्मदर मिलती है। कुपोषण, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, अकाल, महामारी आदि के कारण, यहाँ उच्च मृत्युदर होती है।

उनसबंधी शताब्दी के पूर्व विश्व के लगभग सभी देश जनांकिकीय संक्रमण की इस प्रथम अवस्था में थे, किन्तु वर्तमान में पिछड़े देशों में भी आयातित स्वास्थ्य सेवाओं एवं ज्ञान के प्रचार प्रसार के कारण मृत्युदर में ह्रास हुआ है। फलतः आज विश्व का कोई भी देश जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में नहीं है।

(2) प्रारंभिक वर्द्धमान अवस्था (Early Expanding Phase) : जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था है, जिसमें जन्मदर उच्च और लगभग स्थायी रहती है, किन्तु मृत्युदर में हास होने लगता है। फलस्वरूप कुल जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती जाती है। इस अवस्था में जन्म दर 35 प्रति हजार या उससे ऊपर रहती है किन्तु मृत्यु 25 से 15 हजार के बीच पायी जाती है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि लाती है, जिससे व्यक्तियों को अच्छा भोजन, पर्याप्त वस्त्र और उपयुक्त आवास की सुविधा प्राप्त होती है। स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान, चिकित्सा सुविधाओं बढ़ने से खाद्य पदार्थों की पूर्ति नियमित बन जाती है तथा अकाल पड़ने की समस्या समाप्त हो जाती है। ये सभी घटक मिलकर मृत्यु दर में तेजी से गिरावट लाती है। दूसरी ओर जन्मदर को प्रभावित करनेवाले कारक जैसे-शहरीकरण शिक्षा परिवार के आकार के बारे में दृष्टिकोण, सामाजिक परम्पराएँ, धार्मिक मान्यताएँ आदि अल्पकाल में लगभग अपरिवर्तित रहते हैं। जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था को “जनसंख्या विस्फोट की अवस्था” भी कहा जाता है।

वर्तमान में अनेक विकासशील देश इसी अवस्था से गुजर रहे हैं। अफ्रीका में इथोपिया धाना, मोरक्को नाइजीरिया, सूडान, कीनिया, तंजानिया युगांडा तथा जायरे; एशिया में अफगानिस्तान, बांगलादेश, ईरान, इराक, म्यांमार, नेपाल इत्यादि देश इसी अवस्था में हैं।

(3) उत्तर वर्द्धमान अवस्था (Late Expanding Phase) यह जनांकिकीय संक्रमण की तीसरी अवस्था है। इसमें जन्मदर का हास होने लगता है तथा मृत्युदर में तीव्र हास होता है। इसमें जनसंख्या वृद्धि द्वितीय अवस्था से कम रहती है, फिर भी यह अवस्था भी जनसंख्या विस्फोट की अवस्था ही होती है। इस अवस्था में जन्मदर 20 प्रतिहजार से अधिक होती है तथा मृत्युदर 15 प्रतिहजार से कम हो जाती है। चूँकि इस अवस्था में औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण होने लगता है। बच्चे की शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर खर्च का भार वहन करने के लिए परिवार सीमित रखने का विचार आने लगते हैं। स्त्रियों के लिए घर से बाहर कार्य करने के अवसर बढ़ते हैं जिनसे लाभ उठाने के लिए परिवार का आकार सीमित रखना आवश्यक हो जाता है। फलतः जन्मदर में कमी आती है।

जनांकिकीय संक्रमण की यह अवस्था मुख्यतः विकासशी देशों में पायी जाती है। अफ्रीका में अल्जीरिया, मिश्र, द० अफ्रीका; एशिया में मलेशिया, भारत फिलीपीन्स, श्रीलंका, थाइलैण्ड, टर्की इत्यादि और लैटिन अमेरिका में ‘ब्राजील, कोलम्बिया, मेक्सिको, पीरू वेनेजुएला इत्यादि देश तृतीय अवस्था से गुजर रहे हैं।

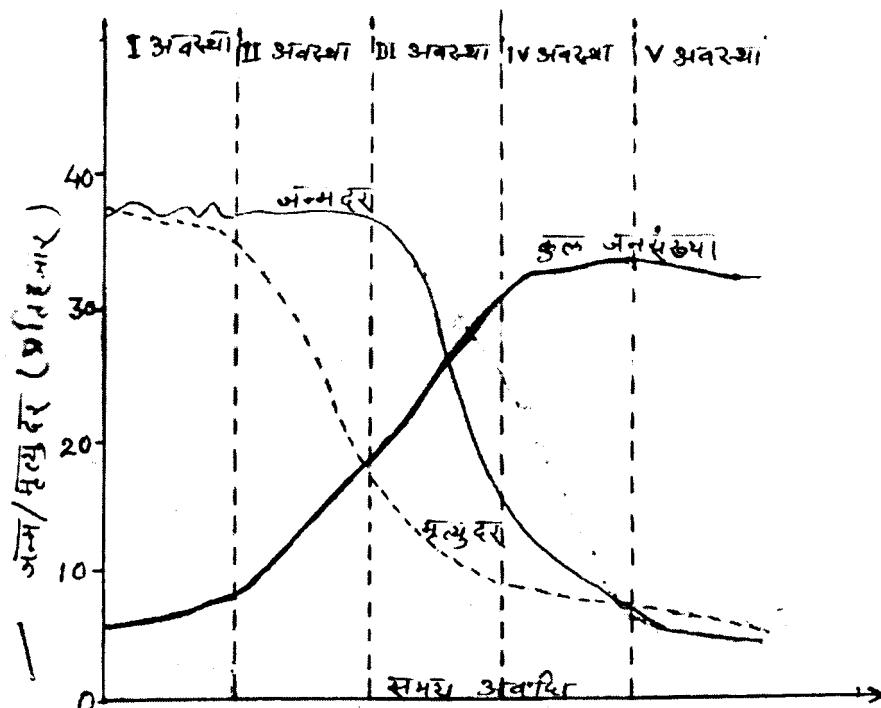
(4) निम्न स्थाय अवस्था (Low Stationary Phase) — यह जनांकिकीय संक्रमण की चौथी अवस्था है, जहाँ जन्मदर और मृत्युदर निम्न स्तर तक पहुँचकर स्थिर हो जाती है। फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि रूक जाती है या बहुत मंद हो जाती है। यह अवस्था तब आती है जब देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ रहन-सहन का स्तर अत्यधिक ऊँचा उठ जाता है। विवाह की आयु में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है। व्यक्ति छोटे परिवार के लाभ समझने लगते हैं। व्यक्ति सुख और आनंद के जीवन को व्यतीत

करना चाहता है। चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकसित हो जाने से महामारियाँ तथा बीमारियों पर नियंत्रण हो जाता है तथा उच्च स्तरीय पोषण की सुविधा प्राप्त होने से मृत्युदर घटकर निम्न स्तर तक पहुँच जाती है एवं स्थायी हो जाती है।

जनांकिकीय संक्रमण की चौथी अवस्था से रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन, अर्जेंटीना इत्यादि देश गुजर रहे हैं।

(5) हासमान अवस्था (Declining Phase) : जनसंख्या संक्रमण की पाँचवीं व अंतिम अवस्था में जन्मदर मृत्युदर से भी कम हो जाती है, फलस्वरूप जनसंख्या के आकार में कमी होती जाती है। अति आर्थिक विकास की स्थिति में स्त्रियाँ संतानोत्पत्ति को पसंद नहीं करतीं, वे अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य के प्रति जागरूक हो जाती हैं। वे शिशुओंके पालन-पोषण के इंझेट में पड़ना नहीं चाहतीं। ऐसी स्थिति में मृत्युदर से कम जन्मदर हो जाती है।

पश्चिम यूरोप के प्रायः सभी देश तथा एशिया में जापान, जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था से गुजर रहे हैं। ब्रिटेन, जर्मनी, पौलेंड, बेल्जियम, स्वीडन, फ्रांस आदि देशों में निम्न जन्मदर होने से जनसंख्या की वृद्धि बहुत कम है। जापान में भी अब जन्म दर मृत्युदर से नीचे की ओर गिर रहा है। फ्रांस को तो डर है, कि वहाँ की जनसंख्या अत्यन्त कम न हो जाये, जिससे राष्ट्र की मानव शक्ति अति दुर्बल हो जाएगी।



चित्र : जनांकिकीय संक्रमण मॉडल

सिद्धांत का मूल्यांकन (Evaluation of Theory)

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत विश्व में जनसंख्या विकास की विभिन्न अवस्थाओं का सामान्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कुछ विद्वानों ने कहा है कि इसका प्रयोग विश्व के सभी देशों में सामान्य रूप से नहीं किया जा सकता है। इस सिद्धांत की आलोचना से सम्बन्धित कई तर्क दिए गए हैं—

(i) चूँकि यह सिद्धांत पश्चिमी देशों की जनसंख्या विकास के अध्ययन पर आधारित है, इसलिए यह सिद्धांत अल्प विकसित एवं विकासशील देशों की जनसंख्या के विकास पर सामान्य रूप से लागू नहीं हो सकता है, क्योंकि इन देशों की जनसंख्या-विकास का क्रम पश्चिमी देशों से भिन्न रहा है।

(ii) जनांकिकीय संक्रमण की गति तथा अवधि विभिन्न प्रदेशों में एक समान नहीं पायी जाती है। अतः यह मॉडल जनसंख्या परिवर्तन का सामान्य मॉडल नहीं है।

(iii) विकासशील देशों के आर्थिक, सामाजिक, प्रौद्योगिकी आदि के विकास की गति एवं दिशा पश्चिमी देशों से अलग रही है, इसलिए प्रस्तुत मॉडल जो पाश्चात्य देशों के जनसंख्या-विकास के अनुभव पर आधारित है, में संशोधन की आवश्यकता है।

(iv) द्वितीय विश्व के देशों (पूर्वी यूरोप के साम्यवादी देश, जैसे-आस्ट्रिया, चेक गणराज्य स्विट्जरलैण्ड, भूतपूर्व सोवियत संघ आदि) में जनांकिकीय संक्रमण काल की शुरूआत 20 वीं शताब्दी के आरंभ में हुई थी और ये देश जनांकिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था (विस्फोटक अवस्था) का सामना किए बिना ही 1940 तक तृतीय अवस्था में प्रवेश कर गए। इस प्रकार इन देशों में यह सिद्धांतया मॉडल सहीं रूप से लागू नहीं होता है।

(v) जनसंख्या के विकास पर देश की स्थानीय संस्कृति तथा जलवायु का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। पाश्चात्य देशों, जहाँ जनसंख्या, संक्रमण का अनुभव किया गया की संस्कृति एवं जलवायु से द्वितीय एवं तृतीय विश्व के देशों की संस्कृति एवं जलवायु भिन्न रही है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बाद भी जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत एक उपयोगी संकल्पना है। इस संकल्पना के आधार पर विश्व के विभिन्न देशों के जनांकिकीय संक्रमण की दशाओं का प्रदर्शन किया जा सकता है तथा जनसंख्या विकास की क्षेत्रीय विभिन्नता का विश्लेषण किया जा सकता है। जनांकिकीय संक्रमण की अवस्थाएँ जनसंख्या की कई विशेषताओं जैसे जनसंख्या संरचना, आर्थिक संरचना, निर्भरता अनुपात, सामान्य स्वास्थ्य जीवन इत्यादि को भी बतलाती हैं।

5.3 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त (Theory of Optimum Population)

अनुकूलत जनसंख्या सिद्धांत माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत में महत्वपूर्ण सुधार का प्रतिफल है। यह सिद्धांत मानव शक्ति-सम्बन्धी आशावादी विचार है। माल्थस ने किसी देश की जनसंख्या की तुलना

उस देश में उत्पादित खाद्यान्न से की है तथा सामान्यतया जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि को हानिकारक समझा। माल्थस के इस विचार के विपरीत कई अर्थ शास्त्रियों एवं विचारकों ने अपने आशावादी विचार व्यक्त दिए कि जनसंख्या वृद्धि हमेशा हानिकारक नहीं होती है। सर्वप्रथम एडवर्ड वेस्ट (Edward West) ने सन 1815 में एक लेख के माध्यम से अपना विचार दिया कि जनसंख्या के बढ़ने से श्रम में विशिष्टता आती है, जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है। इस सिद्धान्त का मूल विचार हेनरी सिजविक (Henry Sidgwick) ने अपनी पुस्तक Principles of Political Economy में व्यक्त किया था यद्यपि उन्होंने अनुकूलतम (Optimum) शब्द का प्रयोग नहीं किया था। उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत कारखाने में अधिकतम प्रतिफल (Maximum Return) के बिन्दु की तरह समस्त राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए भी अधिकतम प्रतिफल का बिन्दु होता है। आगे चलकर एडविन कैनन (Edwin Cannan) ने अनुकूल जनसंख्या की संकल्पना की व्यस्थित एवं वैज्ञानिक सिद्धान्त का स्वरूप प्रदान किया। वर्तमान समय में इस सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाने का श्रेय डाल्टन (Dalton), राबिन्स (Robbins), कार्ल्स सॉण्डर्स (Carls Sounders) तथा हिक्स (Hicks) जैसे अर्थशास्त्रियों को है।

अनुकूलतम जनसंख्या का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning And Definition of Optimum Population)

अनुकूलतम जनसंख्या का अर्थ किसी देश के लिए सर्वोत्तम जनसंख्या से है। इसका अर्थ जनसंख्या के उस आदर्श आकार से है, जो उपलब्ध साधनों पर कार्य करने के लिए होना चाहिए। किसी समय पर उपलब्ध संसाधनों तथा ज्ञात प्रौद्योगिक की दशा में वह जनसंख्या अनुकूलतम मानी जाती है, जिसमें प्रति व्यक्ति आय अधिकतम हो तथा जिसमें थोड़ी सी वृद्धि या कमी होने पर प्रतिव्यक्ति आय में कमी हो जाय।

अनुकूलतम जनसंख्या को परिभाषित करते समय अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग मापदंड अपनाए हैं—

कार-साण्डर्स के अनुसार “अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो अधिकतम कल्याण को जन्म दें।”

(“The optimum population is that population which produces maximum social welfare ”)

इन्होंने अधिकतम कल्याण की बात की है जो प्रतिव्यक्ति अधिकतम वास्तविक आय होना आवश्यक नहीं है परन्तु उसी के समान माना जा सकता है।

बोल्डिंग (Boulding) के शब्दों में “वह जनसंख्या जिसपर ‘जीवन-प्रमाप अधिकतम होता है, अनुकूलत जनसंख्या कहलाती है।’” (The population at which the standard of life is at maximum is called the optimum population)। यहाँ जीवन प्रभाव (Standard of life) वस्तुतः रहन-सहन का स्तर (Standard of living) की जगह प्रयुक्त हुआ है। इसका अर्थ व्यापक है जिसमें अधिकतम आय से प्राप्त भौतिक सुख के साथ-साथ गुणात्मक पक्ष (मनुष्य का चरित्र, अच्छा स्वास्थ्य, शिक्षा आदि) भी आ जाता है।

राबिन्स (Robbins) के शब्दों में “अनुकूलतम जनसंख्या वह है, जिससे अधिकतम उत्पादन संभव होता है। (Optimum population is) the population which just makes the maximum returns possible” राबिन्स ने अनुकूलतम जनसंख्या का मापदंड “कुल अधिकतम उत्पादन” को बनाया है वहीं डाल्टन (Dalton) महोदय ने “प्रति व्यक्ति अधिकतम आय” को मापदंड बनाया है। डाल्टन के शब्दों में “अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो प्रतिव्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है।” (Optimum population is that which gives the maximum income per head).

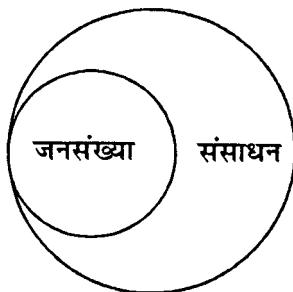
सिद्धांत की व्याख्या (Explanation of the Theory)

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत तीन मान्यताओं पर आधारित है—

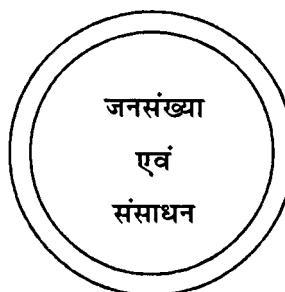
- (1) जनसंख्या में वृद्धि होने पर कार्यशील जनसंख्या और कुल जनसंख्या समान दर से बढ़ती है।
- (2) प्रति श्रमिक औसत उत्पादन में परिवर्तन होने पर प्रतिव्यक्ति आय में भी उसी अनुपात में परिवर्तन (वृद्धि या ह्रास) होता है।
- (3) किसी निश्चित समयावधि के भीतर जनसंख्या बढ़ने के बावजूद उपलब्ध प्राकृतिक साधनों, पूँजी प्रौद्योगिकी आदि में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

उपर्युक्त मान्यताओं के आधार पर अनुकूलतम जनसंख्या को जनसंख्या के ऐसे आकार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो प्रति व्यक्ति अधिकतम वास्तविक आय प्रदान करे। यदि किसी देश की वास्तविक जनसंख्या इससे कम है तब वहा न्यून जनसंख्या (Under Population) की दशा मानी जाएगी। ऐसी स्थिति में उपलब्ध प्राकृतिक एवं पूँजीगत साधनों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाएगा। अतः कुल उत्पादन एवं प्रति व्यक्ति वास्तविक आय का स्तर निम्न रहेगा। जब इस देश की जनसंख्या बढ़ेगी तब कुल श्रमशक्ति में वृद्धि होगी। श्रमशक्ति बढ़ने पर विशिष्ट करण एवं श्रमविभाजन प्रणाली को बड़े पैमाने पर लागू किया जाएगा। इससे देश में उपलब्ध प्राकृतिक एवं पूँजीगत साधनों का अधिक कुशल उपयोग संभव होगा। फलस्वरूप कुल उत्पादन तथा प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि होगी। जनसंख्या बढ़ने पर वस्तुओं के बाजार का भी विस्तार होता है, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन की प्रेरणा मिलती है तथा अर्थव्यवस्था की उत्पादकता बढ़ती है। इस स्थिति में श्रम की औसत एवं सीमांत उत्पादकता बढ़ जाने से “वृद्धिमान प्रतिफल नियम” (Law of Increasing Return) लागू हो जाता है। यह जनसंख्या बढ़ते-बढ़ते ऐसे बिन्दु पर पहुँच जाती है जहाँ पर स्थिर साधनों (प्राकृतिक एवं पूँजीगत साधन) का पूर्ण उपयोग संभव होता है तथा प्रतिव्यक्ति उत्पादन (वास्तविक आय) की मात्रा अधिकतम होती है। यही जनसंख्या का अनुकूलतम बिन्दु होता है। इस अवस्था में “स्थिर प्रतिफल नियम (Law of Constant Return) लागू होता है। यदि जनसंख्या बढ़कर अनुकूलतम बिन्दु से आगे निकल जाती है, जब साधनों के साथ श्रमशक्ति की मात्रा आवश्यकता से अधिक हो जाती है। इस स्थिति में श्रम की औसत तथा

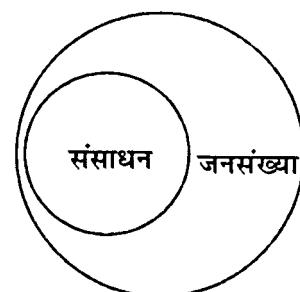
सीमांत उत्पादकता घटने लगती है अर्थात् “हासमान प्रतिफल नियम” (Law of Diminishing Return) लागू हो जाता है। वास्तव में यह अति जनसंख्या (Over Population) की अवस्था है। इस अवस्था में प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय घटती है, सामान्य एवं अदृश्य बेरोजगारी उपस्थित हो जाती है। न्यून जनसंख्या, अनुकूलतम् जनसंख्या तथा अति जनसंख्या को चित्र-2 से समझा जा सकता है।



1. न्यूनतम् जनसंख्या



2. अनुकूलतम् जनसंख्या



3. अति जनसंख्या

अनुकूलतम् जनसंख्या सिद्धान्त को निम्न तालिका का द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

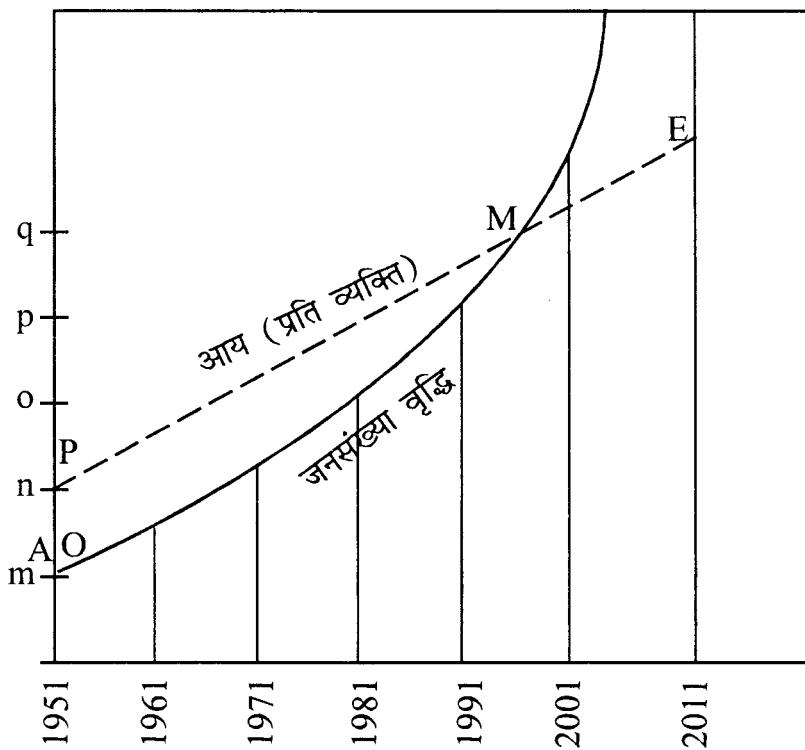
काल्पनिक देश की कुल जनसंख्या, वास्तविक आय, प्रतिव्यक्ति आय

| जनसंख्या (करोड़ में) | कुल वास्तविक आय करोड़ रूपया में | प्रति व्यक्ति आय (रूपये में) |
|-------------------------|------------------------------------|---------------------------------|
| 20 | 400 | 20 |
| 30 | 750 | 25 |
| 40 | 1200 | 30 |
| 50 | 1250 | 25 |
| 60 | 1320 | 22 |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकतम् प्रतिव्यक्ति आय (30 रुपये) तब प्राप्त होती है जब जनसंख्या 40 करोड़ है।

अतः काल्पनिक देश के लिए 40 करोड़ जनसंख्या की अनुकूलतम् जनसंख्या है। इससे कम या अधिक जनसंख्या रहने पर प्रति व्यक्ति आय में कमी आ जाती है।

अनुकूलतम् जनसंख्या सिद्धान्त को चित्र 3 द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है—



चित्र में X अक्ष पर जनसंख्या का आकार तथा Y अक्ष पर प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय को लिया गया है। AP वक्र जनसंख्या के प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय में होनेवाले परिवर्तन को प्रकट करता है। प्रारंभ में जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ प्रति व्यक्ति वास्तविक आय भी बढ़ती जाती है। जब देश की जनसंख्या बढ़ते-बढ़ते OM हो जाती है, तब प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अधिकतम (ME) हो जाती है। यदि जनसंख्या OM से भी आगे बढ़ती है तब प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय घटने लगती है। अतः OM जनसंख्या की अनुकूलतम जनसंख्या है। यदि देश की वास्तविक जनसंख्या OM से कम है, तब इसे न्यून जनसंख्या कहा जाएगा। यदि वास्तविक जनसंख्या OM से अधिक है, तब इसे अति जनसंख्या कहा जाएगा। AP वक्र की आकृति दर्शाती है कि प्रारंभ में E बिन्दु तक 'वृद्धिमान प्रतिफल नियम' लागू होता है। E बिन्दु पर 'स्थिर प्रतिफल नियम' तथा E बिन्दु से आगे "हासमान प्रतिफल नियम लागू हो जाता है।

अनुकूलतम जनसंख्या के विचलन की माप (Measurement of the deviation of Optimum Population) :

किसी देश या प्रदेश में न्यून जनसंख्या तथा अतिजनसंख्या की स्थिति ज्ञात करने के लिए डाल्टन (Dalton) महोदय ने निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया है—

$$M = \frac{A - O}{O}$$

जबकि $M =$ समायोजन अभाव की मात्रा (न्यूनाधिक Maladjustment)